

M.A. (Pali & Prakrit) (Choice Based) Regular-Semester 2016 Semester - I
MAPPCBCS104 - Paper-IV : Suttapitak And Bhasha Vigyan

सुत्तपिटक आणि भाषाविज्ञान

P. Pages : 4

Time : Three Hours



GUG/W/16/8010

Max. Marks : 80

- सूचना :- 1. सर्व प्रश्न सोडविणे आवश्यक आहे.
सभी सवाल छुडाना अनिवार्य है।
2. स्वीकृत माध्यमात उत्तरे लिहा.
स्विकृत माध्यम में उत्तर लिखिए।

1. अ) ससंदर्भ भाषांतर करा. 10
ससंदर्भ अनुवाद कीजिए।

अ) इयं धंमालिपी देवानं प्रियेन प्रियदसिनाराजा लेखापिता (आ) इध न किं चिजीवं आरभित्या प्रजू हितव्यं (इ) न च समाजो कतव्यो (ई) बहुकं हि दोसं समाजमिह पसति देवानं प्रियो पियदसि राजा अस्ति पि तु एकचा समाजा साधुमता देवानं प्रियस प्रिय दसिनोराजा (ऊ) पुरा महानसमिह देवानं प्रियस प्रियदसिनो राजो अनुदिवसं व हूनि प्राण सत सहस्त्रानि आरभिसु सूपाथाय (ए) से अन यदाअंय धमलिपी लिखिता ती एव प्रा णा आरभरे सूपाथाय दो मोरा एको मगो सो पि मगो न ध्रवो (ऐ) एते पि यी प्राणा पछा न आरभिसरे

OR / अथवा

(अ) सर्वत विजीता मिह देवानं प्रियेस प्रियदसिनोराजो एवमपि प्रचंतेसु यथा चोडा पाडा सवियपुत्तो केवलपुत्तो आ तंब पंणी अंतियको योनराजा ये वा पि तस अंतियकस सामिपं राजानो सर्वज देवानं प्रियेस प्रियदसिनो राजोद्वो चिकिछ कता मनुसचिकीछा च पसुचिकिछा च (आ) ओसुद्धा निच यानि मनुसोपगानि च पसोपगानिच यतयत नास्ति सर्वजा हारापितानि च रोपापितानि च (इ) मूलानिच फलानिच यतयज नास्ति सर्वत हारापितानिच रोपा पितानि (ई) च पंथेसु कूपा खानापिता क्रछाच रोपापिता परिभोगाय पसुमनुसानं

- ब) चौथ्या प्रस्तर लेखातील महामहिम सम्राट अशोकांच्या राजाज्ञेचे सविस्तर वर्णन करा. 6
चौथे प्रस्तर लेख में महामहिम सम्राट अशोक के राजाज्ञा का सविस्तर वर्णन कीजिए।

OR / अथवा

महामहिम सम्राट अशोकांची पाचव्या प्रस्तर लेखातील राजाज्ञा सविस्तर विषद करा.
महामहिम सम्राट अशोक की पाचवी प्रस्तर लेख में राजाज्ञा सविस्तर विशद कीजिए।

2. अ) ससंदर्भ भाषांतर करा. 10
ससंदर्भ अनुवाद कीजिए।

(अ) देवानंपियो पियदसि राजा एवं आह (आ) अस्ति, जनो उचावचं मंगलं करोते आबाधेसु वा आवाहविवहिसु वा पुज लाभेसु वा प्रवासमिह वा एतम्ही च अयामिह च जनो उचावचं मंगलं करोते (इ) एत तु महिडायो बहुकं च बहुविधं च छुंद च निरथं च मंगलं करोते (ई) त कतव्यमेव तु मंगलं (उ) अपफल तु खो एतरिसं मंगलं (ऊ) अयं तु महाफले मंगले य धंममंगले (ए) ततेत दासभतकमिह सम्यप्रति पती गुरुनं अपचिति साधु पाणेसुसयमो साधु ब्रम्हणसमणानं साधु दानं एत चं अज च एतरिसं धंममंगल नामा (ऐ) त कतव्यं पिता व पुतेन वा भाजा वा स्वामिकेन वा इदं कतव्य मंगलं आव तसं अथस निस्तानाय (ओ) अस्ति च पि वुत साधु दन इति (औ) न तु एतारिसं अस्ता दानं व अनगहो व यारिसं धंमदानं व धमनुगहो व

OR / अथवा

- (अ) अयं धम्मलिपी देवानं पियेनं प्रियदसिना राजा लेखापिता अस्ति एवं
संखितेन अस्ति मज्झमेन अस्ति विस्त तन
(आ) न च सर्वे सर्वत घटितं
(इ) महालके हि विजितं बहु च लिखितं लिखापयिसं चेव
(ई) अस्ति च एत कं
पुन पुन वुतं तस तस अथस माधुरताय किंति जनो तथा परिपजेय
(उ) तज एकदा असमातं लिखित अस देसं व सछाय कारणं व अलोचत्पा लिपिकरा परधेन व

- ब) महामहिम सम्राट अशोकाच्या बाराव्या प्रस्तर लेखातील राजाज्ञेचे सविस्तर वर्णन करा.
महामहिम सम्राट अशोक के बारावे प्रस्तर लेख में राजाज्ञा का सविस्तर वर्णन कीजिए।

6

OR / अथवा

सम्राट अशोकाच्या गिरनार शिलालेखातील तेराव्या प्रस्तर लेखाचे वर्णन करा.
सम्राट अशोक के गिरनार शिलालेख में तेरावे प्रस्तर लेख का वर्णन कीजिए।

3. अ) ससंदर्भ भाषांतर करा.
ससंदर्भ अनुवाद कीजिए।

10

एवं मे सुतं । एक समयं भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे । तेन खो पन समयेन आयस्मा नन्दो भगवतो भाता मातृच्छापुत्तो सम्बहुलानं भिक्खून् एवमारोचेति - “अनभिरतो अहं, आवुसो, ब्रह्मचरियं चरामि; न सक्कोमि ब्रह्मचरियं सन्धारेतूं, सिक्खं पच्चक्खाय हीना यावत्तिस्सामी” ति।
अथ खो अज्जतरो भिक्खु येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नं खो सो भिक्खु भगवन्तं एतदवोच - “आयस्मा, भन्ते, नन्दो भगवतो भाता मातृच्छापुत्तो सम्बहुलानं भिक्खून् एव मारोचेति - “अनभिरतो अहं, आवुसो, ब्रह्मचरियं चरामि, न सक्कोमि ब्रह्मचरियं सन्धारेतूं, सिक्खं पच्चक्खाय हीना यावत्तिस्सामी” ति ।

OR / अथवा

एवं मे सुतं। एकं समयं भगवा सावत्थियं जेतवने अनाथ पिण्डिकस्स आरामे । तेन खो पन समयेन यसोजप्प मुखानि पञ्चमतानि भिक्खुसतानि सावत्थिं अनुप्पत्तानि होन्ति भगवन्तं दस्सनाय । तेथ खो आगन्तुका भिक्खू नेवासिकेहि भिक्खूहि सद्धिं पटिसम्मोदमाना सेना सनानि पज्जापयमाना पत्तचीवरानि पटिसामयमाना उच्चासद्दा महासद्दा अहेसुं।
अथ खो भगवा आयस्मन्तं आनन्दं आमन्तेसि - “के पनेते, आनन्द, उच्चासद्दा महासद्दा, केवट्टा मज्जे मच्छविलोपे” ति?
“एतानि, भन्ते यसोजप्पमुखानि पञ्चमत्तानि भिक्खुसतानि सावत्थिं अनुप्पत्तानि भगवन्तं दस्सनाय। तेते आगन्तुका भिक्खू नेवासिकेहि भिक्खूहि सद्धिं पटिसम्मोदमाना सेनासनानि पज्जा पयमाना पत्तचीवरानि पटिसामयमाना उच्चासद्दा महासद्दा” ति।

- ब) सारिपुत्त सुत्ताचा सारांश लिहा.
सारिपुत्त सुत्त का सार लिखिए।

6

OR / अथवा

सुत्तपिटकात उदान ग्रंथाचे स्थान व महत्व विशद करा.
सुत्तपिटक में उदान ग्रंथ का स्थान और महत्व विशद कीजिए।

4. अ) पालि भाषेचा विकास, उगम व विस्तार सांगा.
पालि भाषा का विकास, उगम और विस्तार बताईए।

10

OR / अथवा

पालि भाषेची संरचना विस्तारपूर्वक लिहा.
पालि भाषा की संरचना विस्तार से लिखिए।

- ब) भाषाशास्त्राच्या अध्ययनाचे क्षेत्र सांगा.
भाषाशास्त्र को अध्ययन का क्षेत्र बताईए ।

6

OR / अथवा

मानवी जीवनात भाषेचे महत्त्व.
मानवी जीवन में भाषा का महत्त्व ।

5. अ) टिपणे लिहा कोणतेही दोन.
टिप्पणियाँ लिखिए कोई भी पाँच।

6

- | | |
|-------------------------------|-----------------------|
| 1) लोकसुत्त | 2) उदान |
| 3) अशोकची निर्दोष शासनप्रणाली | 4) अशोकाची धम्मयात्रा |

- ब) योग्य पर्याय निवडा.
सही पर्याय चुनिए ।

10

- | | |
|--|------------------------------------|
| 1) अशोकांच्या शिलालेखाची भाषा आहे.
अशोक के शिलालेख की भाषा है।
अ) द्रविडी
क) ब्रह्मी | ब) पालि
ड) संस्कृत |
| 2) सम्राट अशोकाच्या शिलालेखाची लिपी आहे.
सम्राट अशोक के शिलालेख की लिपी है।
अ) छान्दस
क) ब्रह्मी | ब) पैशाची
ड) द्रविडी |
| 3) पालित किती व्यंजने आहेत?
पाली में कितने व्यंजन हैं?
अ) 43
क) 34 | ब) 33
ड) 58 |
| 4) तिसऱ्या धम्मसंगितीचा अध्यक्ष होता.
तिसरी धम्म संगिती का अध्यक्ष था ।
अ) उपगुप्त
क) सम्राट अशोक | ब) देवगुप्त
ड) मोगली पुत्ततिस्स |
| 5) सिप्पसुत्त यात येते.
सिप्पसुत्त इस में आता है।
अ) दीघनिकाय
क) उदान | ब) सुत्तनिपात
ड) महावग्ग |
| 6) उदान ग्रंथ कोणत्या पिटकात येतो?
उदान ग्रंथ कौनसे पिटक में आता है?
अ) सुत्तनिपात
क) सुत्तपिटक | ब) विनयपिटक
ड) अभिधम्मपिटक |

- 7) तिसऱ्या धम्म संगितीत कोणता ग्रंथ सम्राट अशोकाच्या गुरुने लिहिला.
तिसरी धम्म संगिती में कौनसा ग्रंथ सम्राट अशोक के गुरुने लिखा ।
अ) यमक
क) कथावत्थु
ब) पुग्गलपज्जति
ड) खन्धक
- 8) धम्मपद ग्रंथात किती वग आहेत?
धम्मपद ग्रंथ में कितने वग है।
अ) 22
क) 28
ब) 26
ड) 24
- 9) अष्टांगिक मार्गात समावेश होतो.
अष्टांगिक मार्ग में आता है।
अ) आठ अंग
क) बारा अंग
ब) चार अंग
ड) अठरा अंग
- 10) प्राण्यांसाठी प्रथम उपचारार्थ दवाखाने याने बांधले.
प्राणीओं के लिए प्रथम उपचारार्थ अस्पताल इसने बनाए ।
अ) राजा शुद्धोदन
क) राजा हर्षवर्धन
ब) राजा बिंबीसार
ड) यापैकी एकही नाही
